# GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

## GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0685**

Classification:

Original File No:

**Title**

Udaipur – M/F – N.W.A
Cong: Parish - Report

Volume:

Running **from year: 1985** **till year:**

**Content:**

- Discription of the works in field of Education Health, Agriculture, Social and Spiritioal Life.
- New methods employed, new projects, developments and Success in the respective fields.

KAILASH

# FLAT-FILE

( 31.5 )

**SUPER EXTRA STRONG QUALITY**

**File No.**_____

1985

UDAIPUR - M/F - NWA

CONG: / PARISH - REPORT

जनसंचार, प्रचार एवं शिक्षण विभाग योजना कार्य विवरण दिनांक 2-7-85

प्रचारक/पादरी गोलमस एक्का ... मंडली/पेरिश मडोई ... क्षेत्र उदयपुर ..... माह जून ..... 1985।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात्रि पाठशाला में बिनती प्रार्थना इसके साथ और लौकिक शिक्षा दिया गया है | भाई बहनों के लिये उठने बैठने तथा दीपक और शिक्षा पाने की सुविधा दी गई है। | जो रात्रि पाठशाला में नहीं आते हैं उन्हें घर-घर जाकर प्रोत्साहन देने की योजना बनाई जा रही है। | डा० सी० के० पाल सिंह के सलाह से। | स्कूल जाने वाले बच्चों का रिजल्ट अच्छा निकला | |
| /ख/ स्वास्थ्य | रोगियों को अस्पताल ले जाकर और बिन्ती प्रार्थना करके, जड़ी बूटी दवाई देकर भी स्वस्थ रहने का सिखाया गया | स्वस्थ रहने के लिये साफ पानी कपड़ा तथा खाने पीने की तरीका अपनाया गया। | स्वस्थ रहने के लिये तलाब, कुआं, गलियों को साफ रखने का योजना किया जा रहा है। | निकटवर्ती डा० के सलाह से। | स्वस्थ में बदलाहट हुआ है | |
| /ग/ खेती बारी | धान-दाल वर्षा ऋतु का फसल किया गया साथ ही रबि फसल भी की गई है। | नया तरीका में रोपा रोपने की पद्धति तथा खाद इत्यादि लगाने का तरीका अपनाया गया है। | खती बारी में सिंचाई करने की योजना की जा रही है। | ग्राम सेवक तथा ग्राम पंचायत के सदस्यों की सलाह से। | खाने पीने के लिये कुछ बढ़ती आय मिला है। | |
| /घ/ आर्थिक | सप्ताह में एक दिन आर्थिक जीवन के विषय पर बात चीत किया जाता है। तथा काम सिखाया गया है | मंडली के बुड्ढों व जवानों को साथ लेकर आर्थिक जीवन के विषय पर आलोचना की जाती है। | आर्थिक जीवन को सफल बनाने के लिये ग्राम सेवकों, ग्रामीण बैंकों से सम्बन्ध रखने की योजना बनाई जा रही है। | — | आर्थिक जीवन पर संतोष मिला है। | |
| /ङ./ आत्मिक | हर रोज बिनती, समाज की जाती है हर सप्ताह गिर्जा की जाती है बाइबल अध्ययन इत्यादि | आत्मिक जीवन में मजबूत होने के लिये कलीसिया के नियमों का पालन करने के साथ ही धर्म देने का तरीका अपनाया | आत्म जागृति के लिये नई योजना में जवानों को मण्डली चलाने आराधना सिखाने का प्रयत्न की जा रही है। | पादरीयों (पेरिसचेयरमेन) तथा मण्डली के जवानों की सलाह से। | संसारिक जीवन से बदलाहट का विशेष फल मिला | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

पंच :- पतरस तिग्गा

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण

दिनांक 2-6-82

प्रचारक/पादरी जीवन दास एक्का मंडली/पेरिश पाकुट क्षेत्र उदयपुर माह जून 1982

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात्री पाठ शाला के द्वारा बच्चों को शिक्षा देते हैं। | जवान युवाती ने गिरजा जाने के लिये हरासत होते हैं। | अंबुशी जवानों ने नये नियम से एक नाटक सिखाने की कोशिश है। | जवानों ने गुप्त बनाई दर्शी करा रहे हैं। इस में शिक्षा प्रचार की योजना | इसमें बर्दी मिला और आपस सुधार होने के लिये मिला | |
| /ख/ स्वास्थ्य | रोगियों को प्रार्थना करने के लिये जाते हैं। और दवाई भी देते हैं। (जड़ी) | घरों की लिपाई पोताई के सिखाये और कपड़ा उपड़ा को भी साफ रखते हैं | गिरजा घर के लिये बनाने के लिये तयार है। | मंडली की सलाह ही से और प्रचार की या आप से | स्वास्थ्य में बदलाहट हुआ | |
| /ग/ खेतीबारी | खेत में मैं खातू बिहे खेतों को मैं पेलन एक घास और दरवा दूं। ताकी अधिक उपजे | खेतों में शेषा जगाने के लिये तैयार हूं। | खेतों में शेषा जगाने के लिये तैयार हूं। | मैं मेरी ही समझ से कोशिश कर रहा हूं | खाने पीने में बढ़ती मिला | |
| /घ/ आर्थिक | सप्ताह में एक दिन आर्थिक जीवन के विषय पर बात चीत करते हैं | मंडली के शान जवान ही आर्थिक जीवन का नया तरीका अपनाया है। | आर्थिक जीवन को सम्भाल करने के लिये ग्राम सेवकों के बजाये योजना बनाई | डा० सिंह के जरिये आर्थिक फल मिला। | आर्थिक जीवन पर सोचा मिला है। | |
| /ङ./ आत्मिक | हर रोज जिंदा समाज की जाती है हर सप्ताह गिर्जा की जाती है। | आत्मिक जीवन में मजबूत होने के लिये कलीसिया के नियमों का पालन करने के साथ ही दान भी देते हैं। | आत्मा जागृति के लिये नई योजना में जवानों की आत्मा में आत्मीकता प्रकाश को जा रही है। | पादरी (पेरिश) चेयरमेन मंडली के जवानों की सलाह से | आत्मिक सांसारिक जीवन को बदलाहट का विश्वास फल मिला। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

आनन्द मसिह
कुजुर

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबध्द कार्य विवरण दिनांक 8-6-1985

प्रचारक/पादरी अमित लकड़ा मंडली/पेरिश लुईस क्षेत्र उदयपुर माह जून 1985।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात्रि पाठशाला के द्वारा बच्चों को प्रौढ़ शिक्षा देना। | घर घर जाकर उनको इकट्ठा करना। | महिलाओं को पढ़ने का सलाह देना। | डाईरेक्टर के सलाह से। | अनपढ़ व्यक्ति लिख पढ़ सकते हैं। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | अस्वास्थ व्यक्तियों को स्वास्थ्य केन्द्र में भेजना। | स्वास्थ प्रोत्साहन के द्वारा से कुछ गोली दिया जाता है। | गाँव, गली, घरों को साफ सुथरा करने का सलाह देना | प्रा० स्वा० केन्द्र के सलाह से | बच्चों को सफाई से रहने का सलाह देना | |
| /ग/ खेतीबारी | धान, दाल खेती के अलावा सब्जी कमाने का सलाह देना | रोपा लगाने का निदाई करने का सलाह देना। | फल फूल का वृक्ष लगाने का सलाह देना। | बालक के सलाह से। | खाने पीने के लिये फल की सब्जी मिल रही है। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक सुधार के लिये मेहनत करना है। | X | बेरोजगारी को रोजगारी के लिये सलाह देना। | " | आर्थिक दशा में सुधार हो रहा है। | |
| /ङ./ आत्मिक | धार्मिक शिक्षा देना सन्डे स्कूल। | घर घर जाना आत्मिक ईश्वरी ज्ञान देना। | चलते फिरते उठते बैठते दुःख विपदा के समय ईश्वर से प्रार्थना। | बी. ई. एल. के सलाह से गाँव के सलाह से | अलौकिक भगवान के द्वारा शिक्षा में बढ़ते जा रहे हैं। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

मंडली पंच + पेरिश पंच

अमृत सिंह

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावद्ध कार्य विवरण

दिनांक 4-6-19.8.6.

प्रचारक/पादरी ..J.i.l.a.n. Minz मंडली/पेरिश .Pathalgaon क्षेत्र .Udaipur.... माह ....June..... 1986 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात्री पाठशाला के द्वारा बच्चे + प्रौढ़ को शिक्षा देना। | घर घर घूम कर उनको स्कूल्हा करना और दैखाना | महिलाओं को भी पढ़ाने का सलाह है और स्कूल ज्ञान देना | डाइरेक्टर के सलाह से। | अपढ़ व्यक्ति किताब पढ़ लिख सकते है। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | स्वास्थ्य के विषय कोई विमार हो गया तो प्रा. स्वास्थ्य केन्द्र में भेजने की सलाह देना। | स्वास्थ्य प्रोत्साहन के द्वारा से कुछ कुछ गोली दिया जाता है। | गांव, गली, घरों साफ सुथरा रखने को जागृत करना। | प्रा. स्वा. केन्द्र के सलाह से | लोग चलवच्चा अपने को सफाई से रहने सिखा रहे है। | |
| /ग/ खेतीबारी | धान, दाल खेती के आलावा, भाजी, मिर्च बैगन, सब्जी लगाना। | रोपा लगाना, जपानी तरीका से, पताल रोपन बागनी साग सब्जी लगाना, कब्जा | खेती बारी के साथ साथ फल फूल का पेड़ रोपन करना (पपिता, आम, कटहर) | कृषि के सलाह से | खाने पीने के लिये फल, कच्चा साग्जी खाने को मिल रहे है। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक सुधार के लिये मिहनत करना है। कराते है। | (1) सिलाई बुनाई, (2) पढ़ाई के लिये प्रोत्साहन देना। | बेरोजगारी को रोजगारी के लिये सलाह देना। | " | आर्थिक दशा में सुधार हो रहा है। बेकार के बेकाम के कोई नहीं है। | |
| /ङ./ आत्मिक | धार्मिक शिक्षा देना रात्री पाठशाला से सण्डे स्कूल से। | घर घर जाना, आत्मिक, ईश्वरी ज्ञान देना नष्ट भ्रष्ट से बचाना, | चलते चलते, उठते बैठते, सुख, बिमारी के समय ईश्वरीक सामर्थ बताना, चंगाई सेवा। | B.E.L. डाइरेक्टर के सलाह से (गांव के सलाह से भी।। | आत्मिक जागृति के कारण लोग शिक्षा ज्ञान में आगे बढ़ रहे है। जिससे आर्थिक सुधार भी हो रहा है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

मण्डली पंच / पेरिश पंच

जोलुस एक्का

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी Rasal Lakra मंडली/पेरिश ....Sinthara क्षेत्र Thalgon..... माह Jun 4-6-1985. 198

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | प्रति दिन शाम को प्रार्थना किया जाता है। | भजन किया जाता है और स्थल वाचन दिया जाता है। | मण्डली में नया गीत सिखाया जाता है। | पंचों की सलाह से। | मण्डली में उत्साह एवं सलाह है। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | रहन सहन एवं खाने में विशेष ध्यान दिया जाता है। | कम्पोटर एवं डाक्टर की सलाह लिया जाता है। | रोगी को अस्पताल भेजने की सलाह दिया जाता है। | पंचों की सलाह से — | शुद्धता का विशेष ध्यान दिया जाता है | |
| /ग/ खेतीबारी | खेती में नया तरीका अपनाया गया है कि खेत रसायनिक दिया जाता है। | गर्मी में धान गेहूँ चना बोया जाता है। | खेत में कई तरीके से खाद एवं रसायनिक का उपयोग करते हैं | पास में रहने वाले गाव वालो की सलाह से | इससे काम करने की उत्सुकता उत्पन्न हुई। | |
| /घ/ आर्थिक | पीछे वर्ष की वरसा से घर पर अधिक बिगाड़ गये हैं। | इस स्थिति में ईश्वर पर अपनी विचार करके कार्य किया जा रहा है। | मंडली में शांत पूर्वक रहते हैं। | सज्जनों की सलाह से। | इसमें स्थिति में चैन है। | |
| /ङ./ आत्मिक | आत्मिक स्थिति साधारण है। गिरजा आना जाना प्रायः ठीक है। | मंडली प्रार्थना होता है। | मंडली में प्रत्येक घर में प्रार्थना होता है | पंचों एवं प्रचारक की सलाह से | आत्मिक जीवन उत्पन्न हुआ। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावधि कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी आनन्दकुमार मिंज मंडली/पेरिश खुखबहार पलोता गाँव क्षेत्र उदयपुर ..... माह [illegible] ..... 198 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | मराडली में सप्ताह स्कूल बच्चों का चलता है। | मराडली के घर घर जा कर बचपन में से आसान सिखना। | माडली भाई बहिन को निषा नहीं पीने का शिक्षा देना। | जी.ई.एल चर्च के सलाह से। | ज्ञान पढ़ लोग पढ़ने लिखने जानते है। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | घर द्वार सब को साफ रखना और गली की सफाई रखना। | माडली के बच्चों को सफाई के शिक्षा देना | मरा सड़ा मछली को चाहे सड़ा मास नहीं खाना चाहिये। | मलेरिया डकारों के सलाह से और गांव के सलाह से। | माडली में भाई बहिनों का बिमारी काम होता है। | |
| /ग/ खेतीबारी | काम धन्धा में भाई बहिन को सुधारना | खेतों खाद देना और समय अनुसार [illegible] घास को निकलना। | पताल और भाटा और जेट वाला राम तोराई खेती करना। | ग्राम सेवक के सलाह से हरेक प्रकार के खेती में खाद देना चाहिये। | धन और रबी खरीफ खेती ज्यादा होता है | |
| /घ/ आर्थिक | अपने घर का गिरा हुआ हालत है। क्योंकि पारिवारिक ज्यादा हैं। | कुछ बारी में पताल खेती और सिलाई करना | सरकी काम नौकरी करना चाहे व्यापार करना। | ग्राम सेवक और प्रचारक के सलाह से। | कुछ अपना आर्थिक जीवन सुधार होता है। | |
| /ङ./ आत्मिक | हफ्ता में एक बार आत्मिक भजन होता है। | मराडली में पारिवारिक प्रार्थना होता है | मराडली में परेशानी भी होता है। | जी.ई.एल चर्च के सलाह से। | गिरजा में आना जाना ठिक होरहा है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

रतन बेक

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी ...[illegible]... मंडली/पेरिश ...तोलामा... क्षेत्र ...उदयपुर... माह ...मई-जून... 1982 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | लिखने पढ़ने के लिये बच्चों को तथा स्त्रियों को ज्ञान लगाया जाता है | पढ़ाने में नया तरीका यही लिया गया कि स्लेट तथा जमीन पर लिखने से अच्छा जानकारी रहेगी। | अगले की पुस्तिका को कागज पर अच्छा लिख कर शिक्षा दिया जाय। | अपना पेरिश पादरी तथा, ग्राम सेवक आज्ञा से। | जो जन अशुद्ध निशान दे रहे थे अब नाम लिख सकते हैं। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | स्वास्थ्य के विषय पर भी सफाई खाने पीने की सफाई ग्राम तथा गलीच सफाई विषय शिक्षा दिया जाता है | रोगी-रोगियों की सेवा के लिये जिड़ी बुटी से किया जाय। | अस्पताल से पर्चा ला कर बांटा जाय। घर घर रोगियों की देख भाल किया जाय। | " | इससे मलेरिया दिख रहा है, घर तथा गांव गली साफ सुथरा है। | |
| /ग/ खेतीबारी | धान, दाल मक्का सब्जी - तेल उपजाते थे। | खाद, जुताई, सफाई किया जाय। | ~~[illegible]~~ सरकारी खाद दिया जाय। | " | इससे अधिक उपज पाई जा सकती है। | |
| /घ/ आर्थिक | बढ़ई गृह की काम किया जाता है खरीद बिक्री किया जाता है | बढ़ई गृह के लिये औजारों की जमा करना | खाट, मचोया, स्टूल, बनाया जाय। | " | इससे तथा बढ़ई स्वास्थ्य की क्या इस है। | |
| /ङ./ आत्मिक | सन्डे स्कूल, बैकल क्लास, महीला समाज किया जाता है। | टोला में सन्डे स्कूल तथा बैकल क्लास महीला समाज के लिये लिडर रखा जाय। | हर रूम को बिन्दी बचन पढ़ने की पारी दिया जाय। | " | टोला समाज तथा जवान संवाती बिशेष कर पा सकते है | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

पादरी टोप्पो

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण

दिनांक 8.6.85 ई०

प्रचारक/पादरी ... [illegible] खलखो मंडली/पेरिश कोदो सरना ... क्षेत्र ... उदापुर ..... माह ... जून ..... 1985 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | बच्चों को बिन्ती करने और स्कूल प्रार्थना करने सिखा रहा हूँ। | घर-घर घुम कर मंडली के पंचो के साथ प्रार्थना करना, मंडली के भाईयों से मिल कर प्रार्थना करते है | मंडली में रह कर हम सुधार के लिए नया विचार किए हैं कि सब घर के सीमा से शिक्षा जाता है | मंडली की सलाह से और पंचों की आज्ञा से कर रहे है | आरसी मिसन के बाहन सब गिर्जा में सम्मेलन होते है यही फल मिला है | |
| /ख/ स्वास्थ्य | मंडली के कोई भी मसीह घराना में बिमार पड़ गये तो प्रार्थना करने जाते है। | अमसीह के घर में भी बुलाते है तो वहाँ पर भी पंच के साथ जो भी सेवा कर रहे हैं। | बच्चों को सफाई से रहने के लिए और स्वास्थ्य के लिए शिक्षा देते है | गाँव के गली में जिस स्थान में गंदा है वहाँ सफाई | के लिए कहने में सुझाव देते है | |
| /ग/ खेतीबारी | खेती बारी के विषय में हम अभी प्रचारक में नया बहाली हुए है और अभी शिक्षा नहीं दिये है | आगे दिन में हम उपाय कर रहे हैं कि खेती करने में और देने में कोशिश करेंगे। | पेड़ लगाना रोपा जगाने के लिए तरीका सिखायेंगे। | आगे चल कर कोशिश करेंगे कि और भी नयी | यथा नया तरीका सिखाकर आगे सिखाएंगे। | |
| /घ/ आर्थिक | अभी हमारे यहाँ डांड में टमाटर का खेती होता है इसलिए महीनात करने में और दे रहे है | शरीर के जीवन के लिए बाहर से मजदुर करने बाहर जाते है और आपना जीवन काट रहे | आपने से हीमत करके मंडली की सेवा करना चाहते है | और मंडली में जो भी सेवा करना उसे जागरिती | करने की कृपा करेंगा | |
| /ङ./ आत्मिक | आत्मिक के विषय में हम संगठान होना प्रार्थना करना, गीत गाते प्रार्थना करते है | आत्मिक शिक्षा के लिए वचन से सिखा रहे हैं। | मंडली के छोटे से बड़े से मिल कर, आत्मिक जीवन में | आगे बढ़ने में जा रहे है। इस लिए | आत्मिक जीवन के लिए आगे बढ़े। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

पौलुस रक्षा

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबध्द कार्य विवरण

दिनांक 8-2-82

प्रचारक/पादरी असमन रायरा मंडली/पेरिश कोडेला क्षेत्र उदयपुर माह ..... 1982

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | प्रौढ़ शिक्षा होता है। | भाई बहनों को वचन सिखाया जाता है। | मण्डली के भाइयों गीत गाने में उत्सुक है | पर्यों के सलाह से | भाइ तमाकहन पढ़ लिख सकते है। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | विन्ती प्रार्थना से शुध किये जाते है | रोगियों को अस्पताल ले जाने का सलाह देते है। | रोगी 6-6 से भाइ बहन को सिखाते हैं। | अगुओं के सलाह से। | साफ सफाई भाइ बहन रहते है। | |
| /ग/ खेतीबारी | काम धन्धा करने के लिए आगवाई करते है। | शेपा लगाने के लिए ~~सिखाया~~ तरिका सिखाते हैं। | पताल लगाने का नई सिखाते हैं। | प्रचार के सलाह से | बढ़ती फसल मिलती है। | |
| /घ/ आर्थिक | भाइयों की आर्थिक सुधार हो रही है। | गिर्जा विन्ती निफा अनुसार चलती है। | मण्डली में आमदनी ठीक है। | ~~ग्राम सेवक की~~ योजना विभाग की सलाह से | दान पुन देना ठीक है। | |
| /ङ./ आत्मिक | मण्डली आत्मिक भजन होती है। | मण्डली साम समाज होती है। | प्रार्थना करने के लिए सिखाते हैं। | मण्डली सेवक के सलाह से | मण्डली के भाइ विन्ती करने के लिए जानते है | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

पर्यों का सही के पास तिर्की

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावधत कार्य विवरण

दिनांक 8-6-85

प्रचारक/पादरी कमलेश्वर मेघो ... मंडली/पेरिश बोगाबहार ... क्षेत्र उदयपुर ..... माह जून ..... 198 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात्री पाठशाला दूसरा बच्चों + प्रौढ को शिक्षा देना | घर घर घूम कर उनको एकत्र करना और बैठाना | महिलाओं को भी पढ़ाने का सलाह और स्कूल ज्ञान देना | इंस्पेक्टर के सलाह से। | आपस व्यवहार पाठशाला सकते है | |
| /ख/ स्वास्थ्य | संस्था के विषय कोई बिमार हो गया तो स्वास्थ्य केन्द्र मे भेजने का सलाह देना | स्वास्थ्य प्रेमसदान के द्वारा से कुछ कुछ गोलि दिया जाता है। | गाँव गली घरों साफ सुथरा रखने को आगाह करना | प्र. स्वा केन्द्र के सलाह से | लोगों अब बच्चों अपने को साफ संफ रहना सिख रहा है। | |
| /ग/ खेतीबारी | धान दाल खेति के आलावे फलफूलों मिर्च बैंगन भी काईलगाना | रोपा लगना जापनी तरिका से आलू बैंगन साग सब्जी कान्दा लगाना शुरू हुआ। | खेति बारी के साथ साथ फल फुल का पेड़ रोपना करना पपिता आम का पेड़ | ब्लौक के सलाह से | खाने पीने के लिये फल भी जो मिल रहा | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक सुधार के लिये मिहनत करना है करते है। | दो सिलाई कुर्सी के 2 पढ़ाई के लिये सलाह देना | बेरोजगारों को रोजगारी के लिये सलाह देना | // / | आर्थिक दशा मे सुधार होरहा है के काम को कोई नहीं है | |
| /ङ./ आत्मिक | धर्म की बाते देना रात्री पाठशाला प्रार्थना सिखा | घर घर जाना निसा पानी से बचना। | चालते उठते बैठते ईश्वर के सामर्थ्य से रोगियों को चंगा करना | | आत्मिक भाव से लोग मेरे आगे बढ़ रहे है | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

मण्डली पंच

रुबेन तिग्गा

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/~~पादरी~~ आनन्द टोप्पो ..... मंडली/पेरिश सिवांरपरा ..... क्षेत्र उदयपुर ..... माह जून ..... 1985 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात स्कूल चलाया बच्चो को स्कूल जाने की सलाह देना | सिखाने के लिये दो जनपिर से गुरुन चुने गये | बत्ती के लिये बिजली का इंतजाम किया गया है। | जी:ई: स्ल: चर्च की सलाह से | लिखने पढ़ने नहीं जानते थे वे भी पढ़ने के लिये जाने लगे | |
| /ख/ स्वास्थ्य | दिन रात बिमार सेवा की जाती है प्रार्थना से दवाई से | बिमारी को अस्पताल ले जाने की सलाह दी जाती है | गली मुहल्ला को साफ करना कुड़ा कचरा दूर गांव के बाहर फेंकना | मन्डली या गांव की सलाह से काम होती है | बिमार की घटी हुई है | |
| /ग/ खेतीबारी | आपने से ही खेती करने खेती करने के लिये बीज बोने के लिये सिखाया | समयानुसार बिज बोना धान की रोपा जगाना के लिये सिखाते है। | गोबर खाद देने के लिये और फलानी खाद देने के लिये | गर्म सेवक की सलाह से और आपने ही सोच समझ से | खेती की बढ़ती होने लगी | |
| /घ/ आर्थिक | कुछ पढ़े लिखे लोगों को सरकारी नौकरी मे जाने की सलाह देते है | कुंवा बारी में नई रिती से आलु कुबी जगाने के लिये सिखाते है। | वृक्ष रोपने के लिये आज्ञा देते है क्लाक से गाड़ी लाकर जगा रहे है | क्लाक की सलाह से और आपने ही सलाह से | आर्थिक स्थीती में बृद्धी हो रही है। | |
| /ङ./ आत्मिक | सन्डे स्कूल, गिर्जा बहीन समाज साम प्रार्थना किया जाता है। | जवान समाज हफ्ता में दोबार घर घर भजना और शिक्षा बिन्ती होती है | समाज चलाने के लिये भाई और बहनो को भी पारी दिया जाता है | जी:ई: चर्च की सलाह से | आत्मीक जीवन की बढ़ती हो रही है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

जुनश लकड़ा

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी ...बेशलमैय खलखो... मंडली/पेरिश ...लामापानी... क्षेत्र ...पलवलगांव... माह ...8/9/... 1984 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | प्रति दिन शाम को प्रार्थना एवं नाम शिक्षा दिया जाता है। | भजन किया जाता है स्थानीय वचन कविता सिखाया जाता है | मण्डली में नयी गीत भजन गाया जाता है | पंचों की सलाह से | मण्डली में उत्साह एवं ज्ञान है | |
| /ख/ स्वास्थ्य | रहन सहन, खाने पीने में विशेष ध्यान दिया जाता है | कम्पोटर एवं डाक्टर की सलाह लिया जाता है। | रोगी को अस्पताल भेजने का सलाह दिया जाता है | पंचों की सलाह से — | शुद्धता का विशेष ध्यान दिया जाता है | |
| /ग/ खेतीबारी | खेती में नया तरीका अपनाया गया है। खेत में रसाईनिक खाद दिया जाता है (एक की घर) | गर्मी में धान, गेहूं बोया जाता है उससे उचित फल पाते हैं। | खेत में नयी तरीका से खाद एवं रसायनिक खाद का उपयोग करके अधिक कमाना है। | पास में रहने वाले बंगालियों की सलाह से | इससे कार्य करने की उत्साहना उत्पन्न हुई | |
| /घ/ आर्थिक | बीते वर्ष की वरसा से खेत पर आर्थिक स्थिति बिगड़ी है | इस स्थिति में भी परमेश्वर पर अपनी विश्वास एवं कार्य किया जा रहा है | मण्डली में मोटी तौर से शान्ति में रहते हैं | सज्जनों की सलाह से | इस स्थिति में चैन है | |
| /ङ./ आत्मिक | आत्मिक शिक्षा स्थिति साधारण है। गिर्जा आना जाना प्रायः ठीक है | मण्डली में परिवारिक प्रार्थना होता है | मण्डली में प्रत्येक घर में प्रार्थना करके रहना आदि सलाह दिया जाता है | प्रचारक एवं पंचों की सलाह से | आत्मिक चैन उत्पन्न हुआ | |

टिप्पणी : – प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

सुसमाचार, प्रचार एवं साहित्य विभाग योजना बद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी प्रेम प्रकाश मंडली/पेरिश लुंड्रा पेरिश मंडली क्षेत्र उदयपुर माह जून 198 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | गांव के भाई बहिनों को प्रार्थना के द्वारा बिमारी को चंगा होने का प्रशिक्षण दिया जाता है। | गाँव में सप्ताह में दो दिन ई स्कूल का सहयोगी काम कीया जाता है। | गाँव में बिजली का सुविधा किया जाता है। | अपने अधिकारियों के सलाह से | मण्डली में शान्ती आन्द है। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | जीवन में साफ सुथरा रहने का ध्यान दिया जाता है। या हर साल पीने का पानी छिड़काईकर के साफ कीया जाता है। | बिमारों को अस्पताल लीया जाता है। | गली मुहल्ला साफ सुथरा कीया जाता है। | मण्डली या गाँव के सलाह से काम कीया जाता है। | सुदृढ़ता का ध्यान दिया जाता है। | |
| /ग/ खेती बारी | अपने से खेती बारी करके ठीक समय पर तरीके से खेती करने का तरीका बताया जाता है। | गरमी में चना, अलसी बोया जाता है। | गोबर खाद या केंचुआ खाद दिया जाता है। | गाँव सेवक और अपने सलाह से | खेती कुछ बढ़ी हुई | |
| /घ/ आर्थिक | यहाँ जमीन की उपज के कमजोरी से आर्थिक दशा बहुत खराब है। | इस दशा में विश्वास के द्वारा प्रार्थना कीया जाता है। | बिक्षा रोपण का शिक्षा दिया जाता है। | सज्जनों की सलाह से | इस दशा में आन्द है। | |
| /ङ./ आत्मिक | कलिसिया बिभाजित है। से यहाँ मण्डली बिभाजित है जो आत्मिक दृश्य का गड़े दसा है। | मण्डली में परिवार प्रार्थना कीया जाता है। | बिन्ती करने के लिए सिखाया जाता है। | प्रचारक एवम पादरी की सलाह से | आत्मिक सुधार हुआ। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किती पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी प्रेमसिंह बेक ..... मंडली/पेरिश ..चाहलपर.... क्षेत्र उदयपुर ..... माह ....जून..... 1987 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | मण्डली में गिर्जा के बाद कई विषय की सिखा रहा हूँ तथा समाज के समय पुराना नियम और नया नियम से शिक्षा दिया। | इससे मण्डली के भाई बहन बचन की शिक्षा पाकर नया तरीका से चल रहे है। इससे मैं नया तरीका अपना रहा हूँ। | अब मैं नया योजना दिन से करने को जा रहा हूँ | मण्डली के तथा पेरिश पादरी की सलाह से कर रहा हूँ - | मण्डली में तरक्की होती जा रही है | |
| /ख/ स्वास्थ्य | मण्डली में रोगियों की सेवा दवाई मालिश से तथा प्रार्थना के साथ सेवा किया जा रहा है। | नया २ लोग रोग मिलने से नया तरीका से काम कर रहा हूँ इससे नया तरीका पा रहा हूँ। | मंडली में नया २ रोग होने से और नया २ तरीका योजना कर रहा हूँ। | मण्डली तथा स्वास्थ्य मन्त्री के कार्यकारी की सलाह से। | प्रार्थना तथा दवाई मालिश से बहुत से रोगी चंगा हो गये है। | |
| /ग/ खेतीबारी | खेती करने का तरीका सब जानते है और समय २ पर ही करते है तौभी खेती करने का तरीका सिखाया जा रहा है। | इससे मण्डली के भाई बहन अब नया तरीका से कुछ खेती को अपना है। | अब आगे को नया योजना करने को कि खुश कर दिये है। | मण्डली के अगुवा याने प्रचारक के सलाह से | इससे और भी फसल मिलने से नया तरीका अपना है। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक परिवार में मेहनत कर रहे है। | अब नया तरीका से अपना को बढ़ा रहे है। | इसी प्रकार आगे को | प्रचारक के सहाय से आगे बढ़ रहे है। | खेती बारी नया फल मिल रहा है। | |
| /ङ./ आत्मिक | आत्मीक जीवन में प्रतिदिन आगे बढ़ रहे है बचन सुनने गिर्जा आराधना में शामिल प्रार्थना में सामील हो रहे है। | नया जोश के साथ नया २ तरीका अपना रहे है। | आगे नई २ विचार महसूस कर के योजना बना रहे है। | कलीसिया पादरी की सलाह से काम किया गया। | इससे फल अच्छा मिला फिर आत्मीक जीवन में प्रतिदिन आगे बढ़ रहे है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

मुनीसिंह

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावध्द कार्य विवरण दिनांक 9-6-85

प्रचारक/~~मान्द्री~~ एन० खेस्स ..... मंडली/पेरिश ... लुडेग ..... क्षेत्र उदयपुर ..... माह ... जून ..... 1985।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | समाज किया जा रहा है | घर घर घूम कर उनको स्वच्छ करना और बैठाना | बहिनों को जानना नाम लिखने + गिन्ती सिखाने | इंचार्ज के सलाह से | आपने नाम मात्र लिख सकते हैं | |
| /ख/ स्वास्थ्य | निकटतम स्वस्थ केंद्र से किया जा रहा है। | गोली वितरण से व साफ सफाई रहने का शिक्षा दिया जा रहा है | नसबन्दी करने से रोक थाम करने की ज्ञान दिया जा रहा है | डाक्टर के सलाह से। | कई महिलाओं को कमजोरी मिली परन्तु अब स्वस्थ है | |
| /ग/ खेतीबारी | धान, दाल खेती के साथ बगान खेती आलू धान इत्यादि लगाना। | रोपा पद्धति जपानी पद्धति से | वृक्ष रोपण की नई योजना। | ब्लोक आफिस के सदस्यों के सलाह से। | खाने पीने के लिये आर्थिक सहयोग मिला। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक सुधार के लिये परिश्रम करना व करना सिखाते हैं। | (1) सिलाई बुनाई (2) पढ़ाई लिखाई के लिये प्रोत्साहन देना | बेरोजगारी को रोजगार के लिये सलाह देना | — | आर्थिक दशा में सुधार हो रहा है। | |
| /ङ./ आत्मिक | धार्मिक शिक्षा देना रात्रि पाठशाला से बच्चों को शिक्षा दी जा रही है। | घर-घर घूम कर बिती प्रार्थना के द्वारा आत्मिक ज्ञान दी जा रही है | ईश्वरीय ज्ञान देना वा बिमारी सेवा करने का योजना। | बी. ई. एल. डा. सी. के पाल सिंह के सलाह से। | आत्मिक सेवा के द्वारा रोगियों को चंगा पाया। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किती पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

मण्डली पंच
पौलुस तिग्गा

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावध्द कार्य विवरण दिनांक ..[illegible]

प्रचारक/पाद्री ..जिवनदान तिर्की मंडली/पेरिश चिल्मीपानी लुईस क्षेत्र ..उदयपुर..... माह .....मार्च..... 1984 ।

| कार्य रूपं | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात स्कूल प्रौढ़ शिक्षा | अतिरिक्त भजन तथा वचन सिखाया जाता है। | मंडली के सुधार के विषय में सिखाया जाता है। | पांचों के सलाह से | कलिसिया को देन दान में अच्छा है। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | मंडली में रोगी सेवा | जंगली जड़ीबूटी दूवाट। | रोगियों को अस्पताल में पहुंचाया जाता है। | महिलाएं वरक के सलाह से | सफाई में ध्यान देते हैं | |
| /ग/ खेतीबारी | आर्थिक काम धन्धा में सुधार | ग्रामों में धन कोनाई तथा, सब्जी लगाने का तरीका | ग्राम 2 पर खाद देना तथा सेवा करना | ग्राम सेवक के दूवाट | वर्ष 84 में धन की उपज बढ़ती हुआ। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक जिवन का रखरखाव हो रहा है। | गिर्जा आमदानी में बढ़ती हो रही है। | मंडली में बदलाहट हो रहा है। | योजना विभाग के सलाह से | मंडली में चर्चा एकजुटता का बढ़ावा हुआ। | |
| /ङ./ आत्मिक | मंडली में भाई बहन अत्मीक जोश में है। | मंडली में विनती समझ लिया जाता है। | भाई बहन को प्रार्थना करना तथा वचन सिखाया जाता | मंडली पांचे के सलाह से | मंडली में भाई तथा बहनों का गिर्जा आना जाना अच्छा है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पाद्री दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

गिर्जा घर प्रचारक क्वाटर है।

पेरिश पांच
[illegible]

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी रूपेशचन्द्र मिंजा .... मंडली/पेरिश बिछीपानी क्षेत्र उदयपुर ..... माह .... मई ..... 1984 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात स्कूल - प्रौढ़ शिक्षा दिया जाता है। | आत्मिक भजन स्थाल वचन सिखाया जाता है। | मण्डली - में पिक्निक मनाया जाता है। | पांचो की सलाह से | बालीशा के दिन में सहायक है | |
| /ख/ स्वास्थ्य | मण्डली में रोगी सेवा किया जाता है। | भी. एच. पी. कार्यक्रम द्वारा | रोगी को अस्पताल पहुंचाया जाता है | ग्रामीण भी. एच. पी. सलाह से। | सफाई में ध्यान रखते हैं | |
| /ग/ खेतीबारी | आदिवासी काम धन्धा सुधार और आनेवाली किसान किया जाता है। | ग्रामी महिला में धान का बोना और आलू लगाया जाता है। | सगम 2 पर खेत में खाद डाला जाता है। | कृषि ग्राम सेवक की सलाह से | 1978 ई. में खेती उपज में बढ़ती है। | |
| /घ/ आर्थिक | आदिवासी जिवन में प्रगति हो रही है। | गिर्जा आमदनी में बढ़ती है। | मण्डली में बदल हट हो रहा है। | योजना विभाग की सलाह से | मण्डली में धर्म खोजक आ रहे हैं। | |
| /ङ./ आत्मिक | सप्ताह में एक बार आत्मिक भजन होता है। | मण्डली में पारिवारिक प्रार्थना होता है। | भाई बहनों को प्रार्थना करने सिखाया जाता है। | मण्डली चलाक की सलाह से | गिर्जा आने जाने में ठीक है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

बिछिपानी मण्डली में प्रचार घर है गिर्जा घर नहीं है।

पेरिश पंच ज्ञानमुत मिंज

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी ....कुमार मिंज.... मंडली/पेरिश ....खोखरीबोली मुड़ा.... क्षेत्र ....उदयपुर.... माह ....मार्च.... 1984 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात स्कूल प्रौढ़ शिक्षा | अधिक भजन एवं अस्थल वचन सिखाया जाता है | मंडली में सुधार के विषय सिखाया जाता है। | पादरी के सलाह से | कलिसिया के देन दान में रुचि है। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | मंडली में रोगी सेवा | जंगली जड़ी बूटी का दवाई | मंडली रोगियों को असपताल पहुंचाया जाता है। | प्रचारक के सलाह से | सफाई में ध्यान रखते हैं। | |
| /ग/ खेतीबारी | आर्थिक लाभ धन्धा में सुधार | ग्रामों में धन बोवाई तथा सस्सीन कन्दा लगाने तरीका। | समाचार प्रचार प्रसार देना तथा सेवा करना। | ग्राम सेवक के द्वारा। | 1982 में खेती उपज बढ़ती हुआ। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक जीवन का सुधार होरहा है। | गिर्जा आमदानी से बढ़ती हो रही है। | मंडली में बदला हट हो रहा है। | योजना विभाग के सलाह से | मंडली में धार्मिक योजना हुआ। का उपस्थिति हुआ। | |
| /ङ./ आत्मिक | मंडली में भाई बहन अच्छी जोश में है। | मंडली में किन्ती समाज किया जाता है। | भाई बहनों को प्रार्थना तथा वचन सिखाया जाता है। | मंडलीपाल के सलाह से | गिर्जा आना जाना अच्छा है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

गिर्जा घर प्रचारक व पादरी है।

पेरिश पंच
जमुत मिंज

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबध्द कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी जयमन मिंज ..मंडली/पेरिश मधोबादरहा ...क्षेत्र ..पलपलगाँव .....माह ..मार्च..... 198 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात स्कूल बैठ कर पढ़ाया जाता है। | पढ़ाई बचन शिक्षा दिया जाता है। | मण्डली में शिक्षा दिया जाता है। | पादरी की सलाह से | मण्डली के देव से सहयोग मिले हैं। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | मण्डली में रोगों की सेवा किया जाता है। | पानी उबाल कर पिया | रोगियों को अस्पताल पहुंचाया जाता है। | डॉक्टर या महिलाओं की सलाह से | सफाई से बचाव सकते हैं। | |
| /ग/ खेतीबारी | धान काम चंडा में सुधार। | गिरजाघर महीना से चार बोना, सोया रोपन, | समय पर खेत में स्वयं डालना | कृषि ग्राम सेवक की सलाह से। | पूरा हुआ है। खेती उपज में बढ़ती हुआ। | |
| /घ/ आर्थिक | पारिवारिक जीवन में पीड़ित है रहे हैं। | फालतू घास धनी से बढ़ती है। | मण्डली से कर्जा दे रहे हैं। | योजना विभाग की सलाह से | मण्डली से धन खरीदना आ रहे हैं। | |
| /ङ./ आत्मिक | सप्ताह में एक बार धर्म भजन होता है। | मण्डली में परिवारिक प्रार्थना होता है। | नई महीना में प्रार्थना करने को शिक्षा दिया जाता है। | मण्डली पादरी की सलाह से | गिर्जा घर जाने से धर्म है | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किती पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी रि.एस.ओ. जयमिंज .. मंडली/पेरिश विरीमडेगा ... क्षेत्र उदयपुर ..... माह ....मई..... 1984 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात्रि पाठशाला प्रौढ़ शिक्षा, परिवार मिजोट होता है। | आत्मिक भजन एवं स्थाल वचन सिखाया जाता है। | मंडली में विकनीक मनाया जाता है। | मंडली पंचों की सलाह से। | कलीशा के देन में सहर्ष देते हैं। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | रोगी सेवा, मी०एच० पी० की ओर से टेबलेट दिया जाता है। | मी०एच० पी० तारका द्वारा | रोगी को अस्पताल पहुंचाया जाता है। | ग्रामीण मी०एच० पी० की सलाह से। | सफाई में ध्यान रखते हैं। | |
| /ग/ खेतीबारी | आर्थिक काम धन्धा में सुधार। | गर्मी महिना में धान की बोना, टमाटर रोपना | समय २ पर खेत में खाद डालना। | कृषि ग्राम सेवक की सलाह से। | १९८४ ई० में खेती उपज में बढ़ती हुआ। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक जीवन में प्रगति हो रही है। | गिरजा आमदनी में बढ़ती। | मंडली में बदलाहट हो रहा है। | योजना विभाग की सलाह से। | मंडली में धर्म खोजक आ रहे हैं। | |
| /ङ./ आत्मिक | सप्ताह में एक बार आत्मिक भजन होता है। | मंडली में परिवारिक प्रार्थना होता है। | भाई बहनों को प्रार्थना करके सिखाया जाता है। | मंडली चालक की सलाह से। | गिरजा आने जाने में रोक हैं। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

विरीमडेगा मंडली में गिरजा घर, प्रचारक घर बन रहा है।

पेरिस पंच - ..

जयमिंज

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावद्ध कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पाद्री ..मधुलेसाकुमार मंडली/पेरिश ..बुड्डाडाड़ क्षेत्र ..उदयपुर ..... माह ..अगस्त ..... 198 ८४

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | भाई स्कूल चलाता है। | कोटकेसीमा और मध्य स्थान वचन सिखाया जाता है। | नयी गीत सिखाया जाता है। | प्रचारक के आज्ञा से | मण्डली में भाई तथा बहिनें पढ़ना लिखना सीखते | |
| /ख/ स्वास्थ्य | विन्ती प्रार्थना से भाई बहिन सुधर किये जाते है। | समय पर बस्ती के कुड़े कचरे को साफ करती और चाल से चलना से सुधार हुई | मती ८६-४७ इस वचन से भाई तथा बहिनों को बताया | पंचों के सलाह से। | गिर्जा आना जाना स्वास्थ्य के साथ आते है। | |
| /ग/ खेतीबारी | काम धन्धा में भाई बहिनें भी सुधार हो रहीहै | पताल लगाना सिखाया। | नई नई खेत बनाकर रोपा लगाया | पादरी के सलाह से। डाक्टर के। | बढ़ती धान मिला मण्डली उन्नती | |
| /घ/ आर्थिक | भाईयों का आर्थिक जिविका सुधार है। | पंचों के द्वारा चंदा दान वसुली होती है। | मण्डली की उन्नती बढ़ रही है। | डाक्टर के आज्ञा से | चंदा दान और और देन भी बढ़ती है। | |
| /ङ./ आत्मिक | मण्डली में भाई तथा बहिनें आत्मिक जोस में है। | वह भाई बहिनें दृढ़ता दिलाया गया | गिर्जा विन्ती ठिक है | मण्डली के भाईयों के सलाह | मण्डली उन्नती के सिखर पर है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पाद्री दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

आगे मैं मशीन काम करना चाहता हूँ। और आगे करूंगा।
मण्डली की सेवा में लगा हूँ। साथ में गिर्जा धार है। प्रचारक को वाकिफ है।

पंचों का सही
मधुलेसाकुमार

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावधत कार्य विवरण दिनांक [illegible]

प्रचारक/पादरी आमार हेम्ब्रम मंडली/पेरिश मारो पेरिश क्षेत्र जयपुर माह जून 1985

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | बच्चों को अक्षर ज्ञान बचन क्या स्थल बचन सिखाया और शिक्षा दिया | बच्चों को स्कूल भेजना बच्चों को सफाई का शिक्षा आगे बढ़ाया | बच्चों को काम सिखना तथा [illegible] चलना भी शिक्षा दिया। शिक्षा | मण्डली तथा गाँव के गाँव वहान और बच्चों [illegible] किस सलाह से | बच्चों ने ज्ञान मिलकर जमा होते है | |
| /ख/ स्वास्थ्य | बिन्ती प्रार्थना द्वारा से रोगीयों की सेवा तथा अस्पताल में बिमारों को आगे बढ़ाया और सुधी दिया | रोगीयों को सुधी क्या रोगीयों के लिए अस्पताल से दवाई की शिक्षा आगे बढ़ाई | इन चीजों के द्वारा शरीर को तन्दुरुस्ती हुआ | — — | रोगीयों ने रोग दुःख से अच्छा हुए | |
| /ग/ खेतीबारी | अपना खेती में बगीचा तथा मण्डली को खाद और रोपा लगाना और धान का पेड़ों एकजगह से दूसरा जगह लगाना | खेतों में खाद की ही और खेतों को सम्हाल किया | इन साल काम के द्वारा सुधार का उन्नति हुआ | — | खेत खाद देने आर्थिक उपाज हुआ | |
| /घ/ आर्थिक | [illegible] पोखरा लगना फलदार लगना और मोटी सब्जी और मिर्चि तथा करला बाड़ी में लगाना | गोला काँदा का गाड़ी तथा खाद किनना किया | बाकरी पालन तथा मुर्गी पालन से और सुवर पालन भी किया | मीसन आधिकारी तथा सरकारी कर्मचारी द्वारा शिक्षा पाकर गाँव के भाईबहिन [illegible] | इस प्रकार से सरल सेखाँ आर्थिक नहीं होता | |
| /ङ./ आत्मिक | बिन्ती प्रार्थना द्वारा बचन पढ़ना शिक्षा देना गाँव के भाई बहिन साथ के आवाज | मण्डली में समय पर घर समाज का सेवकाई किया | मण्डली में बिन्ती सिखना तथा गीत गाना भी समय पर होता है | मण्डली में गिनी आराधना [illegible] गाड़ी को आवाज | मण्डली में अच्छा याद संगठन आत्मिक [illegible] है | |

टिप्पणी : – प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

सुलेमन सोरेंग

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनावधि कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी ..उज्जवल लकड़ा.. मंडली/पेरिश ..भुगडेगा.... क्षेत्र ..गुमला..... माह ..... 198 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | बच्चो को दस आज्ञा वचन पढ़ने को सिखाया | बच्चो को स्कूल जाने सफाई से रहना शिक्षा दिया। | वचन पढ़ने में उतसु के समय को अनुसा साम सुबाह का | पुरोहितो की ओर से कि सरकारी कर्मचारियों की सलाह से। | अगुवा छात्र के स्थान पर छात्रों लिखना | |
| /ख/ स्वास्थ्य | बिन्ती प्रार्थना के द्वारा सेवा। | रोगियो को दवाई के लिये अस्पताल जाने की शिक्षा। | अस्पताल की गोली दवाई, इंजेक्शन द्वारा स्वास्थ्य सेवा को | " | साफ सफाई रखते है। | |
| /ग/ खेतीबारी | धान बोना रोपा लगाना भाई बहनों को दिखाया। | बनाखेती देना और सिखाई करना | बीज लगाने के पहले खेत तैयार करना और खाद डालना। | " | बढ़ती धन में परिवार उन्नती | |
| /घ/ आर्थिक | पताल और सब्जी लगाना। | गांवो में कन्दा लगाना मड़िया रोपना दिखाया। | मन्डली की सुधार हो रही है। | " | दान देने में बढ़ती है। | |
| /ङ./ आत्मिक | बिन्ती प्रार्थना के लिये भगवाई देने समाज के लिये शिक्षा देना है। | खिलानी जीवन प्रार्थना का जीवन होना जरूरी है। | मन्डली में बैबल की शिक्षा देना इसके लिये लिड़ रखना | " | मन्डली के उन्नती में नई फलक है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

आलोक टोप्पो

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबध्द कार्य विवरण दिनांक .....

प्रचारक/पादरी ..डेसन्तर हेम्ब्रो.. मंडली/पेरिश विपराही..... क्षेत्र उदयपुर..... माह ..... 1985 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | मंडली दूर में पहिला शाम धर्मीक शिक्षा दिया | मंडलीयों में प्रचारकों को रात्रि स्कूल चलाने का जोर दिया जा रहा है | गाँव में हर परिवार के बच्चों को स्कूल भेजने के लिये जागृत करना | १ फिल्ड सुपरवाईजर २ शासन की सलाह | लोग शिक्षीत हो रहे हैं। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | रोगियों को इलाज के लिये अस्पताल पहुँचाने में सहायता किया तथा प्रार्थना द्वारा सेवा किया | गाँव की सफाई लोगो के रहन सहन साफ सुथरा पर शिक्षा दिया | नजदीक के दवाखाना के साथ संपर्क रखना शासन का जो प्रबन्ध है उसके अनुसार शिक्षा देना | प्रशासन की ओर से रोमी कलीशा की ओर से | प्रार्थना से जंगली जेड़ी बूटी से, अस्पताल से कई रोगी चंगे हुए | अस्पताल दूर दूर जगहों में है। |
| /ग/ खेतीबारी | साग सब्जी, दाल, बसकर कंद, इत्यादि | मंडली के लोगों को साग सब्जी उपजाने में उत्साहीत किया | लोगो बीज दे कर लगवाने का और ठीक समय पर बीज डालने के लिये | १ शासन की ओर से ग्राम सेवक की, २ बी. ई. एल. की सलाह | अपने लिये सभी माह साग सब्जी मिलता है | हमारे देश में सिंचाई का कोई प्रबन्ध नहीं है। |
| /घ/ आर्थिक | बहुत बार गाँव के लोगों को उद्धारी दे कर सहायता पहुँचने का प्रयास किया | गाँव वा मंडलीयों में गोल फन्ड रखने, तरीका है | समय के बहुमूल्य समझ कर काम करना २ मिसलोनी ३:१० के अनुसार काम करना | १ देश की शासन की सलाह २ परमेश्वर के वचन पर ध्यान करने से ३ मसीही शिक्षा से | हर घटी में पूर्ती मिला | हमारे इस देश में लोग शराब पी कर समय को बहुमूल्य नहीं जानते हैं |
| /ङ./ आत्मिक | हर मंडली में सन्डे स्कूल माता समाज चलाने का प्रयास किया। हर मंडली में वास्टर सेवकाई देने का प्रयास किया | गिर्जा के बाद या पहिले धर्मीक शिक्षा देना | १ पेरिस में कॅवल कलास २ " " माता शिक्षा कलास ३ पेरिस में पंचों का शिक्षा कलास करने का विचार | १ इलाका की सलाह ३ बी. ई. एल. डाईरेक्टर की सलाह | लोग आत्मिक शिक्षा में बढ़ रहे है। | हर मंडली में वास्टर सेवकाई वर्ष में ३ बार तक किया |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक [illegible]

प्रचारक/पादरी : प्रभुदयाल एक्का मंडली/पेरिश : पिपराही क्षेत्र : उदयपुर माह : जून [illegible] 1985

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | रात्री पाठशाला के द्वारा बच्चों प्रौढ़ को आत्मिक लौकिक जीवन की सुधार शिक्षा देना। | घर घर घूम कर उनको इकट्ठा करना बैठाना | बच्चे प्रौढ़ महिलाओं को भी पढ़ाना और स्कूल ज्ञान देना | डाईरेक्टर साहब के सलाह से | अन्धकार में लिख पढ़ सकता है। समय में दिनों दिन परिवर्तन हो रहे हैं। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | कोई बिमार होगया तो विनती प्रार्थना द्वारा सेवा करना स्वास्थ्य केन्द्र में भेजने की सलाह देना | विनती प्रार्थना के साथ साथ जंगली दवाईयाँ दिया जाना | गाँव गली घर साफ सुथरा रखने की अगवाई करना। | गाँव के सलाह से | लोग बाल बच्चे साफ सुथरा रहने सिख रहा है। | |
| /ग/ खेतीबारी | धान उड़द मुंगफली गोभी कन्दा कोसरी मिर्च मुनगा करेला लगाना | जैविक खेती लगाना खाद राख दे दे कर रोपना | खेती बारी के साथ साथ फूल का वृक्ष लगाना पपीता आम केला लगाना | क्लीक के सलाह से | खाने के लिए फल कन्दा सब्जी मिल रहा है सब फसल में बढ़ती हो रहा है। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक सुधार के लिए मेहनत कराते हैं | सिलाई बुनाई रोजगारी के लिए प्रोत्साहन देते हैं | बेरोजगारी को रोजगारी के लिए सलाह देना | गाँव की सलाह से | आर्थिक दशा में सुधार हो रहा है | |
| /ङ./ आत्मिक | धार्मिक शिक्षा देना रात्री स्कूल से सन्डे स्कूल से | घर घर जाना आत्मिक ईश्वर ज्ञान देना नशा पानी सट्टा बुराई से बचाना। | मण्डली में घूमते फिरते दुःख बिमार के समय ईश्वर की सामर्थ बताना चंगाई देना। | साहब के सलाह से | आत्मिक भगुवाई से शिक्षा ज्ञान में आगे बढ़ रहे हैं। | |

टिप्पणी : – प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

मंडली पंच धनसिंह मिंज

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण

दिनांक .....

प्रचारक/पादरी ..सुरेश मिंज..... मंडली/पेरिश ..पिछाभाना..... क्षेत्र ..रुकमपुर..... माह .....जून..... 1985

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | कटेकिस्म सिखाया जाता है। | गीत भजन में जोशिला हो रहे हैं | मंडली में समय 2 पर एक साथ प्रार्थना मनाया जाता है | पंचो की सलाह | मंडली देन में आगे बढ़ रहे है | |
| /ख/ स्वास्थ्य | रोगी सेवा के लिए अनुवाद किया जाता है। | नर्स, एच पी तरिका द्वारा | रोगियों को अस्पताल पहुंचाया जाता है | ग्रामीण भविष्य की सलाह से | सफाई में ध्यान हो रहा है। | |
| /ग/ खेतीबारी | सुधार हो रहा है | गर्मी में धान लगाना तथा टमाटर लगाया जाता है | समय 2 पर खेत में खाद डाला जाता है | ग्राम सेवक की सलाह से | खेती बढ़ती मिला | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक जीवन में प्रगति हो रही है | आमदनी में सुधार हो रहा है | मंडली में बदलाहट हो रहा है | योजना विभाग के सलाह से | धर्म खोजक आ रहे है | |
| /ङ./ आत्मिक | आत्मिक जोश में आ रहे है | पारिवारिक प्रार्थना होता है। | भाई बहनों को प्रार्थना सिखाया जाता है। | मंडलीपंचो की सलाह से | गिर्जा आने जाने में सुधार दिख रहा है | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

~~जगेश्वर~~ जयसिंह महानोंदया

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग योजनाबद्ध कार्य विवरण दिनांक 10-6-85

प्रचारक/पादरी ...जायमसीह... मंडली/पेरिश सलवा पारा पिपरहा क्षेत्र उदयपुर ..... माह ...जून..... 1985

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | सन्डे स्कूल बच्चों को सिखाया तथा पाठ्य शिक्षा इत्यादि सिखाया तथा सुसमाचार का वचन पढ़ाया | आत्मिक गीत तथा बिनती प्रार्थना सिखाया जाता है। | मण्डली में खेल खेलना तथा पिकनीक इत्यादि किया | मण्डली पादरी की सलाह से किया जाता है। | बच्चे रुचि तथा संगठन में आते हैं | |
| /ख/ स्वास्थ्य | मण्डली के भाई तथा बहनों को बिमार में बातें प्रार्थना के द्वारा तथा अस्पताल भेजने का व्यवस्था किया। | मलेरिया के द्वारा | बिमारियों को अस्पताल पहुँचाना आज्ञानुवाई | ग्रामीण भी रुचि की तथा मलेरिया की सलाह से | सफाई में ठीक रहते हैं। | |
| /ग/ खेतीबारी | साग सब्जी लगाया तथा कंदा इत्यादि भी लगाया था। | गर्मी माह में बोना तथा आसाढ़ माह में रोपा लगाना आदि किया। | खेत में दो बार खाद लगाना पड़ता है | ग्राम सेवक की सलाह से | समय आने पर खाने को मिलता है। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक जीवन के लिये अनेक प्रकार का विचार किया जैसे :- मूंगफली लगाना गन्ना लगाना इत्यादि। | गिर्जा आमदनी में बढ़ती है। | मण्डली में सुधार हो रहा है। | योजना विभाग की सलाह से | मण्डली में धर्म खोजक पाते हैं | |
| /ङ./ आत्मिक | बोया मण्डली होने का भी सब भाई बहिन विश्वास में है और आज्ञानुवाई किया। | घर मिशन तथा प्रार्थना समाज का सब होने से मण्डली सुधार किया। | मण्डली सेवा तथा दान देन आदि घर २ में घूमकर वापस करना। | आत्मिक आज्ञानुवाई मण्डली की सलाह से | मण्डली आत्मि ठीक है। गिर्जा आने जाने में ठीक है। | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

सलवा पारा मण्डली में गिर्जा घर नहीं है

प्रचारक एकेटर पब्लिशर है।

पेरिस पंच

मण्डली पंच

अनुवास पब्लिशर

सुसमाचार प्रचार एवं साहित्य विभाग यो[illegible]नावध्द कार्य विवरण दिनांक १-६-८५....

प्रचारक/~~पादरी~~ [illegible] मंडली/पेरिश [illegible] क्षेत्र [illegible] माह जून..... 1985 ।

| कार्य रूप | अब तक किया | नया तरीका अपनाया | नयी योजना | किसके सलाह / आज्ञा से | क्या फल मिला | टिप्पणियां |
|---|---|---|---|---|---|---|
| /क/ शिक्षा | बच्चों को कई किस्म का ज्ञान तथा स्पष्ट वचन सिखाया और धार्मिक शिक्षा दिया। | जवान या युवती के द्वारा सन्डे स्कूल में वचन का शिक्षा देना। | बच्चों का हाजिरी होना और किसी प्रकार का उत्साह दिलाना है। | अपने ही इच्छा और विचार के अनुसार | बच्चे एकट्ठा होना सीखे और उनकी सुधार हुई। | |
| /ख/ स्वास्थ्य | बिन्ती प्रार्थना द्वारा रोगियों की सेवा किया तथा अस्पाल की भरुवाई और शुचिालया। | बिमारी के समय बहुत जल्दी प्रचार को खबर घर घर सुनाना। | घर दरवाजा साफ सुथरा रखने का शिक्षा देना। | डाक्टरों की सलाह से | कई एक बिमारी से अच्छे हो गये। | |
| /ग/ खेतीबारी | कम्पाउंड के अन्दर हाजारी में साग सब्जी लगाया था। | कोचाई कन्द रोपने में नया तरीका अपनाया | कम्पाउंड के अन्दर फलदाई वृक्ष लगाना रोपना। | मंडली की सलाह से | समय पर सब्जी का खाने को मिला। | |
| /घ/ आर्थिक | आर्थिक जीवन के लिये कभी २ ~~[illegible]~~ काम भी किया। | आर्थिक सहायता में किसी दूसरे के काम काज में सहायता किया। | आर्थिक जीवन के लिये एक लड़के को गाड़ी चलाने का ड्रेनिंग के लिये भेज रहा हूं। | एक मेकानिक जवान के सलाह से। | आर्थिक सहायता के द्वारा लोग मसीही संगठन में स्थिर होने लगे। | |
| /ङ./ आत्मिक | मंडली दो भाग हो जाने से बचे हुए विश्वासीयों का सुधार रूप से सेवकाई तथा भरुवाई किया। | घर मिजिट, बिन्ती प्रार्थना, सन्डे स्कूल, शनिवार समाज, बहिन समाज, नहीं था इन परिवार से मंडली सुधार किया। | मंडली दिन दाग घर २ घुम २ चर वासुन करना। | आत्मिक भरुवाई मंडली की सलाह से | मंडली विश्वास में स्थिर हुई | |

टिप्पणी : - प्रत्येक कर्मचारी, प्रचारक और पादरी दो तीन माह में उपरोक्त विषयक विकास के लिये क्या-क्या किया और करने चाहते हैं इसका विवरण थोड़े शब्दों में लिखें। मंडली या पेरिश के किसी पंच से सही करा कर सुपरभाईजर के वजरिये डाईरेक्टर के पास भेजें।

मंडली अध्यक्ष
नवीन रतन खो
४-६-८५

# GURUKUL PERSPECTIVE

Quarterly Bulletin of Gurukul Lutheran Theological College and Research Institute MADRAS 600 010

JANUARY 1979 FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY NO. 12

## A Participant Reacts on the Pastors' In-Service Training Held At Nagercoil

The Pastors' In-Service Training for the year 1978 was held at the Kottar Animation Centre, Bishop's House, Nagercoil from October 30th to 3rd November, 1978. It was jointly sponsored by Gurukul and Concordia Theological Seminary, Nagercoil.

The Theme of the Pastors' In-Service Training was "Approaches to Church Renewals."

Pastors' In-Service Training began appropriately with the opening Devotion conducted by Dr. B. H. Jackayya, Principal, Concordia Theological Seminary at 2:30 p.m. The devotion was based on Psalm 86. In his key note address Dr. Jackayya said, 'The Church is not what it ought to be. It should be a suffering community, a sharing community and a serving community'. It was followed by a remarkable introduction given by Rev. P. Manoharan, the Programme Secretary, Gurukul to the participants about the aim and nature of the Pastors In-Service Training (PIST).

The first lecture was delivered by Bishop L. Easter Raj, Acting Director, Gurukul, Madras on the topic "Renewal in Preaching" at 4:30 p.m. In his opening talk he made it clear to the Pastors that PIST was something different from the Seminar. It was intended to renew the potentiality of a Pastor. He was of the opinion that both the renewal of the Church and renewal in the Preaching ministry should go hand-in-hand. He also said, 'Preacher is more than a Teacher. The Teacher may appeal to the mind but the Preacher reaches the heart of the listener. The Pastor should proclaim the Gospel in such a way that it captures the mind and soul of the listener. So preaching is the primary duty of the Church."

The Second day, 31st October being the "Reformation Day" the series of lectures and the programme of the day had been carefully worked out in such a way that it inspired each one of us with a real spirit of Reformation. The two major areas of Reformation that the churches need to experience had been brought out by Dr. Felix Sugirtharaj, Vice President, Rural Community Development Association, on the plan of Social Education and Mrs. V. Nallathambi in the direction of the 'Role of Women in the Church'.

Dr. Felix Sugirtharaj in his lecture on 'Social Action Renewals' had rightly pointed out that the major part of the village congregation were landless, power-less and poor. Presenting the Gospel to them would be to liberate them from the wretched bonds of slavery and exploitation. He also said that the social action was not social transformation but social service. 'The Church' he said 'has to be involved in the ministry of the world apart from its spiritual discourses delivered from the Pulpit".

It was followed by a dynamic lecture delivered by Mr. Devamanoharan, President, Rural Community Department Association on the same topic as the continuation of the lecture given by Dr. Felix. At the very outset of his lecture Mr. Devamanoharan captured the attention of the participants by drawing a 'dynamite' on the blackboard. 'A Christian Youth' said Mr. Devamanoharan — is a dynamite having all the hidden talents and potentialities. When the fire is set on the dynamite in terms of new programmes the outer shell of environmental difficulties blast off and he comes out in flying colours.

The afternoon of 31st October brought into our midst Mrs. V. Nallathambi, Gurukul, Madras. She delivered a thoughtful lecture on the topic "Role of women in the renewal of the Church". The lecture soon picked up a new momentum in shifting its value to the idea of the 'Ordination of Women'. The outcome of the lecture was a lively and a fruitful discussion. We all felt that the Reformation of our times should be in line with 'the place of Women in the Church.'

On the evening of the Reformation Day we had been invited to participate in the 'Cultural Programme' rendered by the Seminarians of the Concordia Theological Seminary, Nagercoil. They gave a number of skits from their cultural background. They also staged a thought provoking social drama. The whole programme was a great enjoyment to all.

The next morning 1st November, the participants gathered once again for the Morning Devotion at 8:30 a.m. It was to be followed by a lecture by Mr. Augustine Asir. A major disappointment in this regard was the inability of Mr. Augustine Asir, Director, Youth For Christ, India to come to deliver his lecture on 'Role of Youth in the Renewal of the Church.' However, we spent the time fruitfully by having a group discussion on the various problems that face the Youth today. At the end of the discussion each group submitted its report for the general reflection.

Soon thereafter, Rev. J. Vincent, Pastor, IELC Madurai gave a lecture on 'Renewal in Worship'. He was of the opinion that Worship should be spontaneous. 'Worship is for man, by man and through man. Liturgy should be lived, and worship must be experienced', he said. These were some of his central points. All through the lecture he had been sharing with us some of his practical experiences in the way of "Renewal in Worship". He also suggested that some of the main political problems that threaten the society today could also be discussed in the Church after Service was over. The participants also seemed to be satisfied with this concluding remark by Rev. J. Vincent and agreed to implement it in their respective churches.

Then followed the long-awaited lecture by the active, young theologian Rev. Thomas Thangaraj on the topic "Charistmatic movement and Church Renewals". All the participants were very grateful to God that this lecturer of Tamilnadu Theological Seminary, could once more return to stimulate his old students to creative and profound reflection on the theme of Church Renewals. He had been tracing the influences of the Charismatic movement right from the position claimed by early Church fathers. At the close of his lecture he made it clear to the participants that any genuine revival must happen on three aspects such as thinking, doing and feeling. These three should happen simultaneously, not exactly through order.

The next morning the 2nd November, we once again gathered in the main hall soon after the morning devotion for another series of lectures, this time another of the eminent theologian Dr. L. W. Meinzen from the Faculty of Concordia Theological Seminary delivered a lecture. The topic suggested to him was "Structures of the Church". He came out with a remarkable statement that the Church was not meant to be a co-operative society or a beneficial organization but the Church itself was the organisation. He also said that the Church must consider itself as an on going process. Finally he issued a printed material on the theme "Congregational Structures suited to ministry and mission" to all the participants for further study and reflection. It was indeed a good, theological resource for all those who are in the practical ministry.

After a brief break, Rev. S. Daniel, Concordia Theological Seminary, Nagercoil appeared on the plat-form to deliver a lecture on "Role of Laity in the Renewal of the Church". He started his lecture by arrowing many questions at the participants. In the course of his lecture he said, "As Peter did not want to suffer we always go for theology of glory but not for the theology of Cross." The fine radical lecture delivered by Rev. S. Daniel aroused a good deal of thought and interest of the participants.

The moment of joy and excitement came upon the participants when they were taken out to Cape Comerin for sight-seeing in the after noon. But alas we could not spend more time at Cape Comerin due to the heavy shower of rain, that came all of a sudden!

The final Day of the PIST — Friday the 3rd November opened with a Devotion. After a brief break, under the guidance of Rev. P. Manoharan the participants were divided into small groups. In the small working groups we were asked to formulate our own stand by answering some of the questions given to us on the theme "Approaches to Church Renewals" with all the training that we had gained under PIST. After spending sufficient time in the working groups we were called to meet together once again for a plenary report. It was the most useful and meaningful session indeed! At 12:30 p.m. the PIST came to a close with a Closing Devotion.

As a closing remark I would like to say that the Pastors In-Service Training in all its proficiency, offered in the sense of faith and courage to make radical and bold changes in the direction of Church Renewals. We the participants returned to our respective places with uplifted and thankful hearts.

S. S. RAJKUMAR

*Chaplain, TMBL College, Porayar.*

---

**FORTHCOMING PROGRAMMES OF GURUKUL**

| | | | |
|---|---|---|---|
| February | 2-4 | .. | Seminar on Liturgy (Tamil) |
| February | 8-14 | .. | Workshop on Missiology |
| February | 16-19 | .. | Seminar on Liturgy (Telugu) |
| February | 20-22 | .. | Conference of Theologically Trained women. |
| February 26 — | March 4 | .. | Workshop on Liturgy |
| March | 8-10 | .. | Seminar on Youth Problems (Tamil) |
| March | 12-18 | .. | Women Church Workers' Training |
| March | 23-25 | .. | Seminar on Youth Problems (Hindi) |

# My Reflection On Annual Theological Refresher Course Held At United Theological College, Bangalore.

It was a great joy for some of us who had left the United Theological College twenty-five years or more ago to come back to the old campus once again. It reminded one of the Refresher Courses in 1950 that some of us attended as students where the Bible Studies conducted by Dr. D. T. Niles set the tone for the Refresher course. One remembers the clarity and depth of those studies. It was gratifying to note that Dr. J. Collison who led them this year was no mean successor. His method of study combining exposition, reflection, and dialogue was new to some of us, and helpful even though the time allowed for Bible study was a little too short. The themes were wide and far reaching: Jesus the Friend of Sinners; the Liberator; the Reconciler; the Cosmic Conqueror; the Risen Christ; covered a wide spectrum of the work and ministry of our land.

The Keynote address by Dr. Russel Chandran on 'The Study of Indian Theology' defined the scope of our course. This was done with the Scholarship and insight one associates with everything done by him. Dr. Chandran remarked rather pertinently, that with so many Sri Lankan participants, a theme of more general interest than the one chosen, "Confessing Christ in the Indian Context" ought to have been chosen. Perhaps the reason for this was that the organizers had no idea that the liberalisation of exchange control regulations by the Sri Lanka Government would permit the attendance of such a large contingent from Sri Lanka. Whatever, the reasons, a fair part of the course was lost on us, as our acquaintance with Tilak, Kamber and Krishnapillai was alight. These talks were helpful to the Sri Lankan students by analogy even though similar giants seem to have been absent from the Sri Lankan scene. This is however no reflection on the competence of Rev. Nirmal and Rev. Savarimuthu who had obviously worked hard on their papers. Four papers I found particularly stimulating were Dr. Jackayya's "Criteria for Confessing Christ", Jyoti Sahi's "Confessing Christ through Art," "The Case study on Ashrams" by Dr. Richard Taylor, and the "Analysis of the religious situation in a rural village" by Abraham Ayoor Kuzhial. Dr. Jackayya gave a very balanced talk on the criteria we must use. Mr. Sahi had many useful things to say about how we hang pictures painted by Western painters rather than those by our local artists. Our temptation he said was to hang pictures we are expected to like rather than those who communicate an experience to us. Dr. Taylor's talk on Indian Ashrams meant more to the older students who lived at a time when ashrams flourished, and who perhaps had visited those ashrams and had met men like C. F. Andrews, Leonard Schiff, Pakenham Walsh, S. S. Selvarathnam, Deaconess Carol Graham and others who had played a leading role in the Ashram movement. Abraham Ayoor Kuzhiels' analysis of the religious situation in a rural village was masterly and helpful. Whether we like it or not, people believe in demons, horoscopes, class and caste, and we must understand what these idols meant to the believer rather than point out that these idols had no objective reality.

There were many other talks that were useful. They are:

"Confessing Christ and Church Structures" by Rev. P. Manoharan

"Development in Roman Catholic Theology" by Fr. Ignatius Hirudayam

"Confessing Christ through Indigenous Worship" by Fr. Paul Puthangadi

"Confessing Christ through Indigenous Worship" (Protestant Side) by Rev. A. P. Nirmal.

"Confessing Christ through study and action" by Prof. Saral Chatterji

"Bhakthi and Ramanuja tradition" by Dr. Eric Lott.

The discussions groups were particularly helpful to those of us who were unfamiliar with the present situation in India. Rev. Manoharan gave us a very useful questionnaire on the life of a pastor, and working through the questions and hearing each others' responses was very educative, and stimulated much needed self-examination. Generally speaking we learnt as much through our responses to the questions and the comments of others as through the talks themselves.

Finally, the hospitality was excellent. All concerned worked hard to make us feel comfortable. We owe a special word of thanks to the band of Hostel students for running the mess. Despite the fact that the programme was rather heavy, we owe a special debt of gratitude to Rev. P. Manoharan and Dr. James Carl for the excellent work done in planning the Refresher Course. It was in many sense a time of spiritual refreshment even though it was not exactly a time of rest!

REV. SHELTON DE SILVA,
*Sri Lanka.*

---

**REQUEST FOR PERSPECTIVE DONATIONS**

In our survey of "Perspective" recipients we found that almost all (84%) felt we should charge Rs.3-5/- per annum, we are grateful for this willingness to support this Gurukul ministry. Our goal is to make this newsletter as a self-supporting magazine.

Therefore, we are making two requests to our readers:

1) to send an annual donation of at least Rs. 5/-
2) to send special donation toward our "Perspective" endowment fund.

---

# Workshop On Liturgy

Evaluating the Liturgy Workshop held at Gurukul between August 15-18, 1978 one of the participants says "It helps to be anchor to rock and gear to the tanks". The whole feeling of the twenty one participants from different churches in India was that they were quite satisfied with the whole programme and many useful things were attended through this workshop. The Workshop was arranged for five days having in mind the different changes that have taken place in the field of Liturgy and also the broad outlook one should have looking into the Liturgy. Rev. A. P. Nirmal of United Theological College was the main course leader. He led three sessions having demonstration also. The First day started with the Opening Devotion by Bishop L. Easter Raj, of Gurukul followed by a presentation of History of Christian Liturgy by him. He mainly pointed out the New Testament teachings, the Hebrew heritage in the Christian Liturgy and the central element in Christian Worship. He pointed out many instances that occurred during the second century in early Christian Church on the developments of Liturgy and the main concern of the Christendum. He concluded pointing out the general characteristics of the Reformed traditions, and pointed out the revival that were brought in the period of Reformation. He concluded 'The Study of liturgy brings an appreciation of our connection with the Church universal. Here we learn the forms and usages by which saints of other centuries, including those who lived before the Reformation, received the assurance of God's presence among them, and by which they gave reverent response to God's offers of Grace. All these are our heritage'.

Independence Day Flag Hoisting ceremony was observed on August 15th followed by two lectures by Rev. A. P. Nirmal. He touched upon the indigenization and discussed about the various possible methods of private devotion and other types of devotions which could be used among the Youth in particular. Almost all those who attended the workshop felt that they were stimulated by this thought provoking lecture. In the mornings of 16th and 17th two Bible studies were conducted by Dr. Lars-Olle Armgard of Gurukul. After the Bible Study on 16th Mr. D. Philip Devaprasad gave a presentation on 'Music in Worship'. He demonstrated different types of worship which are being used in the Worship by using tapes and discs. His presentation was impressive. On the fourth day Rev. R. John of Andhra Evangelical Lutheran Church led the discussion on the Symbolism in Christian Worship. He writes in his evaluation:

1. Most of the symbols explained are found in most of the Churches of the participants.
2. Some new symbols such as the Wine and the Branches, Palm Branches are also noted.
3. Two participants gave the meaning of the two candles on the Altar, one representing the Human Nature and the other representing the Divine Nature of Jesus. It may also be true.

During the Workshop the participants were asked to write Psalms and one of the Psalms which is composed on Lementation by Rev. P. Prabhakar Rao CSI Medak Diocese is appended:

Lord, thank you for the freedom
to our nation,
Sacrifices made by the past generation.
But what is freedom, Lord?
Is it an ism to be studied,
Or a political jargon to be buried?
Is it licentiousness — each to himself,
And amassing wealth for oneself?
Is it to trample upon the poor?
If not this, what else, Lord?
I am promised freedom of speech,
But muzzled at the dissent.
Freedom to profess faith,
But privileges to forfeit
They called me a Harijan,
But treated me as a Durjan
Caste, creed, and language are building
Fortresses for people for a hiding.
What if a fence itself grazes
It's master's garden of grapes?
What if fathers of correction
Flounder in corruption?
To the jobless the fruit of freedom
Has become a curse of boredom.
They say I have freedom to vote,
But they bind me with a note
I build houses for them for a dwelling,
None I have for a living.
Though I am free of fetter,
Poverty, disease and death, they say, do not matter.
I looked to the Church,
But its in lurch
Leaders are there many,
Labouring for money.
Is this all freedom what I pined for!

Finally, during the plenary session it was suggested that this kind of programme should be held in local places so that many could participate in this. It was even suggested by one of the participants that Church leaders should also be present to see the changes needed in our 'Old Style of forms of Worship'.

Concluding devotion was conducted by Rev. P. Manoharan and after that certificates were distributed to the participants.

---

## STAFF PARTICIPATION

**TAFTEE Standards Committee**
**TAFTEE Executive Committee**
**NMS Executive Committee**
**CASA South Zonal Committee**
**Women Development Seminar, A. E. L. C.,**
**Workshop on Development, U. E. L. C. I.,**
**All India Council of Christian Women — Second Assembly.**

---

# Pastors' In-Service Training at Ranchi

A two day Regional level seminar for Pastors in Hindi area was arranged immediately following the Gurukul College Council meetings on 9th and 10th Novemeber, 1978 in Ranchi in which nearly 15 pastors took part. This programme had to be postponed twice because of floods in North India.

Bishop Easter Raj, of Gurukul inaugurated the Seminar on 9th November with an Opening Devotion. The whole programme was introduced to the participants. Excepting the Opening Devotion the rest of the presentations were in Hindi which made the participants to devote their full attention and to involve more in the discussion.

The first presentation was on "Ministry: occupation, profession or status" by Rev. Royan Topno of the Gossner Theological College, Ranchi. He pointed out the main concern of ministers and the purpose of the call we have as ministers. It is not something we have as status but a call to save to serve the people. This was followed by a group discussion in which questions were raised on issues coming out of their experience.

After the morning devotion conducted by a participant; Rev. M. Tete, Principal of the Gossner Theological College gave a presentation on 'Biblical understanding of Mission He gave many passages from the Bible on the understanding of the Mission and the Christian in general and pastors in particular. This was followed by a presentation by Dr. C. K. Paulsingh, the Director of Mission fields of GELC on Mission in the context of local congregation'. He with his experience on the mission field said about the various responsibilities the local congregation has on the Mission and the many possible spheres in which the local congregation can involve in the mission.

Rev. Dong of the Gossner Theological College, Ranchi gave the final presentation on "Importance of Preaching in the Mission of the Church." Rev. Dong narrated many instances which made Preaching as the main source of real missionary challenges given to the people. After this the participants were divided into two groups and were asked to discuss on questions given to them. The groups gave valuable reports with some recommendations which are being considered by Gurukul for detailing further action.

This was an attempt for the long awaited Gurukul North and we are hoping and trusting in the Lord that Gurukul/North will come into existence and serve the churches in the North and Middle India.

# They Visited Gurukul

| | |
|---|---|
| MISS CHRISTA HELD, Community Development Service | *LWF Geneva* |
| MR. JAN JERNAES, Community Development Service | *LWF Geneva* |
| MRS. HEIDI GIESELER, Community Development Service | *LWF Geneva* |
| DR. K. RAJARATNAM, Church Cooperation Department | *LWF Geneva* |
| MRS. VERA SPAETER, Community Development Service | *LWF Geneva* |
| MR. THORSTEN MANSON, | *Sweden* |
| DR. F. A. SCHOLE | *Canada* |
| DR. PAUL H. VON TUCKER | *W. Germany* |
| DR. FREDERIK B. PIELLUSCH | *U. S. A.* |
| REV. (MISS) EVA ZABOLAI-CSEKME | *LWF Geneva* |

# Yuoth of Madras Come Together for a Day

Sunday the 15th October, 1978 was a day full of joy, singing and sharing since there was a Youth Rally arranged by Gurukul for the Madras Youth. Nearly 95 boys and girls from all the Lutheran Churches in Madras participated with real enthusiasm. The rally started with a Divine Service in the Schwan Memorial Chapel conducted by the Rev. P. Manoharan, of Gurukul.

After the Service Mr. Victor Manogaram, Director, Youth For Christ, East Asia was the main guest speaker for the occasion. Mr. Manogaram spoke on the 'Holy Spirit' and made the participants feel the reluctance we have towards Him. He started the necessity of coming closer to God and to be true witnesses with the continued strength of the Holy Spirit.

The afternoon session saw the boys and girls very brisk. A Bible quiz was conducted by Bishop L. Easter Raj, of Gurukul in which people from Ambattur recorded an impressive win. After the quiz some Bible games were conducted in the lawns of Gurukul. Again Ambattur group got the first prize!

The rally came to a close with a Song Service participated by all the groups. The Lutheran Men's Voice Choir gave two numbers followed by Solos and group songs. Bishop Easter Raj concluded the Rally praising God for His grace in bringing the youth of Madras together for a Day!

Talking to the participants after the Rally we felt that Gurukul should continue to conduct such rallies to make the youth to come together and share the Good News. To continue this venture Gurukul has decided to have some more Youth Rallies in coming Days!

# Administrative Development At Gurukul

The 53rd meeting of the Gurukul College Council was held on 8th and 9th November, 1978 at Gossner Theological College, Ranchi which fulfilled the desires of the Northern Lutheran Churches. Among the matters discussed and resolved were he following:

1. The Council resolved to invite Dr. Michael Von Bruck to serve in the teaching faculty of Gurukul for at least a period of not less than three years.
2. The Council resolved to invite the Rev. Dr. Kenneth C. Haugh, Pastoral Care Team Ministries to serve on the Faculty of Gurukul in 1980 to help in conducting programmes in Counselling and Pastoral Care.
3. The Council reiterated the request of the Executive to MELIM to send Rev. E. Hahn to Gurukul as a visiting professor for two or three months each year for training of Church Workers in Muslim work.
4. The Council has expressed its eagerness to get Rev. Gnanabaranam Johnson as soon as possible to take care of the Publication Department.
5. Apointment of Committee members:

   a) The Council has appointed the following members for committees for a period of one year:

Building Committee:

Mr. B. A. Jeyapalan—*Chairman*
Mr S. C. Dharmaraj
Mr. Justin.

Executive Committee:

Bishop A. C. Kondpan
Dr. S. W. Schmitthenner
Rev. Dorairaj Peter.

   b) The Rev. Dr. G. Thomas Edward was appointed as the Treasurer of the Gurukul College Council for a period of three years.

6. B. D. Programme:

   A Committee consisting of the Director of Gurukul (Convener), Dr. Jackayya, Dr. G. Devasahayam, Rev. V. John, Rev. M. Tete, Dr. G. Thomas Edward, and Bishop Jayaseelan Jacob was formed to study the possibility of reviving the B. D. course and also to find out the possibility of conducting Post graduate studies.

# Faculty Changes

Dr. Lars-Olle Armgard an Ethics Theologian from the University of Lund sponsored by CSM was at Gurukul for one year from January 1978. He helped and guided the development of the Ethics curriculum project of Gurukul in collaboration with the major Christian colleges namely the American College in Madurai, St. Joseph's College in Trichy, Madras Christian College and Loyola College in Madras in South India, besides taking active part in all the programmes of Gurukul. A farewell function was held at Gurukul to express sincere gratitude to Dr. and Mrs. Lars-Olle Armgard for the valuable services they rendered during their stay at Gurukul. Both the Gurukul faculty and Council recorded their appreciation of their contribution to Gurukul's ministry.

Dr. Niels-Peter Moritzen of Erlangen University has joined the faculty and will be conducting Workshops and Seminars on Preaching, Missiology and Liturgy till March 1979. We are thankful to E. L. M. for sending him over to us and supporting his stay.

Edited and published by Mrs. V. Nallathambi for GURUKUL and printed at S I G A, Madras-10.

GURUKUL PERSPECTIVE

PRINTED MATTER

GURUKUL
KILPAUK
MADRAS-600 010

Rev. Saban Tirkey
G.E.L. Church
Ranchi, Bihar.